अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अक्टूबर-2023

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2023-2025
Published on 08th Oct. 2023, Posting at RMS, Sri Ganganagar on 10th or 11th Oct. 2023

मासिक पत्रिका

अजायब ✡ बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–छठा	अक्टूबर–2023

4 संदेश

5 जहां आसा तहां वासा

9 गुरुमुख

17 जो माँगना है सतगुरु से ही माँगे

25 नशा छोड़ें

27 भाई केहर सिंह

33 बंदे दियां आसां सदा हुंदियां नां पूरियां

34 धन्य अजायब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकाम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला–श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी** सहयोग – **ज्योति सरदाना व डॉ. सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 259 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा कार्यक्रम के शुरु में दिया गया एक संदेश

संदेश

10 जून 1994 फ्रांस

अपने गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। यहाँ कई भाषाओं के प्रेमी इकट्ठे हुए हैं अगर हम सारी भाषाएं एक ही समय पर बोलेंगे तो सतसंग का माहौल नहीं बनेगा। जो प्रेमी मुंबई जाते हैं, उन्हें पता ही है कि वहां आठ भाषाओं के प्रेमी इकट्ठे होते हैं लेकिन सतसंग पंजाबी भाषा में ही होता है। हम जिनकी याद में बैठे हैं, वे जरूर हमारी आत्मा की भूख–प्यास बुझाते हैं। बाद में ग्रुप–लीडर अपने–अपने ग्रुप को सतसंग समझा देते हैं।

यहां सतसंग दो भाषाओं में होगा। आशा करते हैं कि ग्रुप लीडर अपने–अपने प्रेमियों को बाद में समझा देंगे। ग्रुप में जो प्रेमी आते हैं, उन्हें पता ही है कि ग्रुप में कई ऐसी प्रेमी आत्माएं इकट्ठी हो जाती हैं जो बातचीत वाले दिन कहते हैं कि हमारा कोई सवाल नहीं है, हमें चुपचाप एक घंटा दर्शन ही कर लेने दें।

कबीर साहब ने कहा था, ''साधु की आंख और माथा देखने वाली चीज़ होते है क्योंकि सत का नूर उनके साथ रहता है। जिनकी आत्मा और मन टिक जाते हैं, उनके मन और आत्मा की प्यास बुझ जाती है।''

जाकी होए भावना जैसी हर मूरत देखी तिन तैसी।

हम जैसे ख्याल और श्रद्धा बनाकर बैठते हैं, जैसा हमारा बर्तन बना होता है, हमें सतगुरु का स्वरूप उसी तरह का दिखाई देता है। सन्तों का शरीर और स्वरूप एक शीशा होता है अगर हम हंसकर देखते हैं तो हंसता हुआ नजर आता है, उदास होकर देखते हैं तो उदास नजर आता है इसमें शीशे का कसूर नहीं होता, कसूर हमारा ही होता है। ***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

जहां आसा तहां वासा

दिसम्बर 1976 हजरत सुल्तान बाहू की बानी

जें दिल इश्क़ खरीद ना कित्ता।
सो दिल बखत नाबखती हू।।

इंसान संसार में मालिक से इश्क, प्यार और मोहब्बत करने आया था लेकिन यह अपने मकसद को भूलकर, रब की आशिकी छोड़कर दुनिया से आशिकी करने लग जाता है। दुनिया से प्यार करने लग जाता है कौम, मजहब और मुल्क से प्यार करने लग जाता है। विषय–विकार, शराब–कबाब के साथ आशिकी करता है, अपने आपको बीमारियां लगा लेता है। दुनिया की आशिकी बार–बार इसे दुनिया में ही जन्म देती है, '***जहां आसा तहां वासा।***' महात्मा त्रिलोचन जी बानी में समझाते हैंः

अंत काल जो लड़के सिमरै ऐसी चिंता में जो मरै।।
सूकर जोनि वल वल उतरै।।

जो बेटे–बेटियों की आशा रखता है मौत के समय सिनेमा की स्क्रीन की तरह बच्चे ही आँखों के सामने आएंगे, वे सू अर की योनि में जाएंगे। सूरनी साल में दो–तीन बार बारह–बारह बच्चों को जन्म देती है। कुदरत का यह असूल है हम जो मांगेंगे, जहां आशा रखेंगे कुदरत वह जरूर देगी।

हम यह नहीं कह सकते कि हमारी मांगे हमें नहीं मिलती है, मांग हर एक की पूरी होती है लेकिन वक्त लगता है। हम आज का बोया हुआ नहीं खा रहे, अब हम पिछला बोया हुआ खा रहे हैं, जो अब बोएँगे वह आगे खाएंगे। इसलिए महात्मा सदा ही कहते हैं कि दुनिया की ख्वाहिशें न रखें, दुनिया से आशिक़ी न रखें।

अंत काल जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता में जे मरै, प्रेत जोनि वल वल उतरै।।

अगर हमें मकानों से प्यार है कि मेरे ऐसे मकान हों तो हमें प्रेत बनकर उन मकानों में रहना पड़ता है।

अंत काल जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता में जे मरै।
सर्प जोनि वल वल उतरै।।
अंत काल जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता में जे मरै।
बेसवा जोनि वल वल उतरै।।

त्रिलोचन जी कहते हैं, ''अगर माया से प्यार है कि मेरे पास ही धन–दौलत हो तो साँप की योनि में जाएंगे। अगर विषय–विकारों के साथ प्यार है तो वेश्या की योनि में जाएंगे।''

अंत काल नारायण सिमरै ऐसी चिंता में जे मरै।
बदत त्रिलोचन ते नर मुकता पीतम्बर वा के रिदै बसै।।

अगर कोई रब से आशिक़ी करता है, प्यार करता है तो वह परमात्मा में समां जाएगा और मुक्ति प्राप्त कर लेगा।

हज़रत बाहु के कहने के मुताबिक जिसने इंसानी जामे में आकर प्रभु के साथ इश्क़–प्यार नहीं किया, वह दुनिया में आया या न आया एक जैसा ही है। अब सवाल पैदा होता है कि हमने परमात्मा को देखा नहीं? जिसे देखा नहीं हम उसके साथ क्या आशिकी कर सकते हैं, क्या मोहब्बत कर सकते हैं?

सच्चे पातशाह महाराज कृपाल सिंह जी का एक लेख अखबार में था। जिसमें यह लिखा था कि जो इंसान, इंसान से प्यार नहीं करता जिसे वह रोज देखता है तो वह परमात्मा जिसे कभी नहीं देखा, उसके साथ प्यार करने का दावा करता है। जिसे हम रोज देखते हैं, उसके साथ प्यार नहीं लेकिन परमात्मा को हमने देखा नहीं, उसके साथ प्यार कैसे कर सकते हैं? मोहब्बत हमेशा समजाति से होती है। जिन्हें हम देखते हैं उन्हीं के साथ मोहब्बत कर सकते हैं।

उस्ताद अज़ल दे सबक पड़ाया।
हत्थ दित्ती सु दिल तख्ती हू।।

जब हम स्कूल जाते हैं तो अध्यापक हमें लिखने के लिए तख्ती देता है। जब सन्तों के स्कूल में दाखिल होते हैं तो वे हमें लकड़ी या लोहे की तख्ती नहीं देते, वे अपना सबक हमारे दिल पर लिख देते हैं।

आप कहते हैं, ''हम तुम्हें जो सबक दे रहे हैं यह मौत के वक्त तुम्हारे काम आएगा। वहां मां–बाप, भाई–बहन, यार–दोस्त कोई भी तुम्हारी मदद नहीं करेंगे। वहां यह सबक जो गुरु से मिलता है तुम्हारे काम आएगा, इसे पका कर देखें।''

बर सर आया दम न मारें।
जां सिर आवे सखती हू।।

जो उस सबक को पका लेता है वह दुनिया में कुछ बनकर नहीं दिखाता। बेशक उस पर कितनी भी सख्ती क्यों न आ जाए, सारी दुनिया के दुःख पहाड़ की तरह क्यों न टूट पड़ें लेकिन वह अपने अंदर से धुआँ तक नहीं निकलने देता और कहता है, 'मालिक तेरा भाणा।'

जब गुरु अर्जुन देव जी महाराज को गरम तवी पर बिठाया गया, वे चौकड़ी मारकर बैठे थे। उनका दोस्त मियां मीर जो बहुत कमाई वाला फक़ीर था, वह आकर कहने लगा, ''गुरुदेव यह क्या? अगर आप हुक्म करें तो मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा दूँ।'' गुरु अर्जुन देव जी ने कहा, ''मियां मीर, यह तो मैं भी कर सकता हूँ लेकिन गुरुदेव का, मालिक का भाणा कौन मानेगा? ऐसा उसके हुक्म में ही है।''

तेरा कीआ मीठा लागै हर नाम पदार्थ नानक मांगै।

सन्त मालिक के शरीक नहीं बनते, उनके प्यारे बेटे बनते हैं, उनकी आज्ञा में रहते हैं कि जैसे आपकी मर्जी है हमें रखें। प्यारा बेटा वही है जो

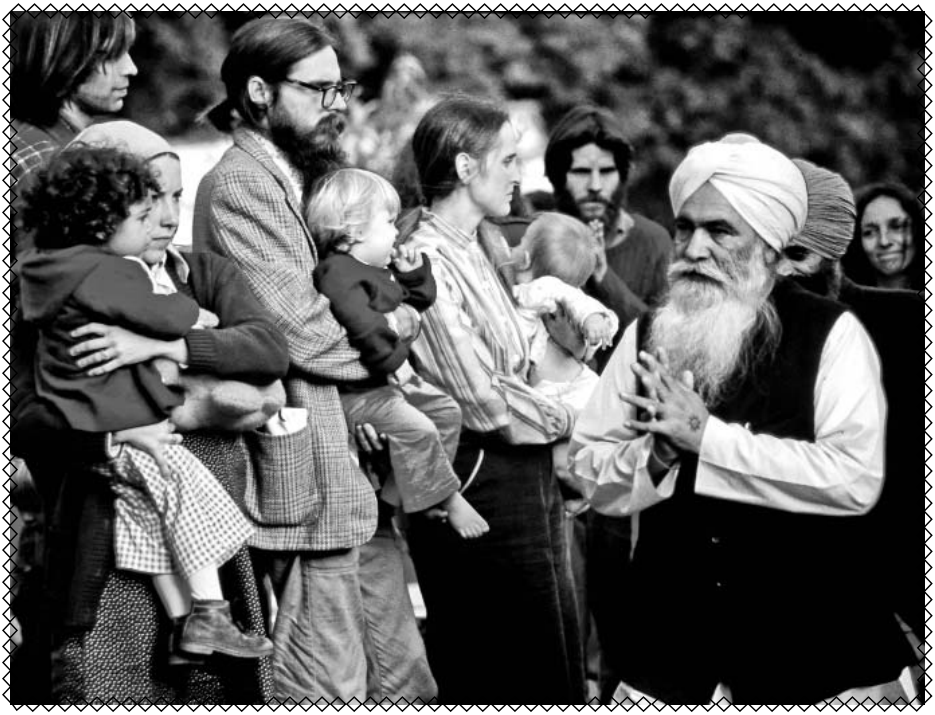

पिता की आज्ञा माने। जो बेटा पिता की आज्ञा नहीं मानता उसे प्यारा बेटा नहीं कहा जा सकता। सन्तमत में आने के लिए चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है। जब हमारी सुरत ऊपरी मंडलों में चली जाती है, हम मालिक के साथ मिलाप करके मालिक का रूप हो जाते हैं, तब हम चालीस दिन के बच्चे जैसे बन जाते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरुमुख

30 नवम्बर 1986 DVD 603(2) 16 पी.एस. आश्रम(राजस्थान)

एक प्रेमी: *– महाराज जी, हम आपको कोलम्बिया में मिलना चाहते हैं। आप वहाँ कब जा रहे हैं?*

बाबा जी: – हाँ भई, सतगुरु नामरूप होता है, नाम में से आया होता है। जब हम उसकी रहनुमाई में बैठकर उसकी आज्ञा का पालन करते हैं तो हम भी नामरूप हो जाते हैं फिर सेवक की अपनी कोई इच्छा नहीं रहती। सेवक के तन, मन और आत्मा पर उसके गुरु ने कब्जा कर लिया होता है। गुरु जहाँ भेजे वह वहाँ जाता है, गुरु जहाँ रखे वह वहाँ रहता है।

मैं एक कठपुतली की तरह हूँ। मेरी डोर परमात्मा कृपाल के हाथ में है, वह जहाँ भेजेगा वहाँ जाना पड़ेगा। आप लोगों का प्यार ही मुझे आपके देश कोलम्बिया में खींच सकता है, यह मेरे अपने वश की बात नहीं। हुजूर कृपाल का हुक्म ही मुझे कोलम्बिया भेज सकता है, वह जब हुक्म दे, मैं आप लोगों की सेवा करके खुश हूँ।

पहले मैं जमीन के नीचे बैठकर अभ्यास कर रहा था। जब हुजूर कृपाल चोला छोड़ गए, उस समय मैंने अपने आपको मकान में बंद कर लिया। मैं रात को आठ बजे से नौ बजे तक एक घंटे के लिए ही बाहर आता था। जब रसल परकिन्स 77 आर.बी. आया तो उसने यह सब अपनी आँखों से देखा है। मैं किसी से मिलकर खुश नहीं था, दुनिया में जाकर खुश नहीं था। यह सब कुछ परमात्मा कृपाल या आपके प्यार के वश में था।

मुझे तो उस वक्त ही पता लगा जब मैं हवाई जहाज में सफर कर रहा था, बताया गया कि हम 42 हजार फुट की बुलंदी से ऊपर उड़ रहे हैं। अंदर जाएं तो कोई शक नहीं रहता, मैं आपके कहे की कद्र करता हूँ।

एक प्रेमी: *– बगोटा के दो नामलेवा प्रेमियों की मृत्यु हो गई। वहाँ के नामलेवा प्रेमियों ने सवाल पूछा है कि हर नामलेवा मरने के बाद सीधा सच्चखंड जाता है या सिर्फ सन्त ही चोला छोड़ने के बाद सच्चखंड जाते हैं?*

बाबा जी: – हाँ भई, सन्त तो अपनी जिंदगी में पूर्ण होते हैं अगर वे पूर्ण न हों तो वे नामदान देने की गलती कभी नहीं करते। अगर कोई पूर्ण हुए बिना नामदान देता है तो वह इस तरह है जैसे वह आग के साथ खेल रहा है, अपनी जड़ खुद काट रहा है। सुंदरदास मेरे पास काफी अरसा रहा है। सुंदरदास के महाराज कृपाल के साथ जो अनुभव हुए उन्हें आप मिस्टर ओबराय की किताब में पढ़कर देख सकते हैं कि किस तरह अंदर झूठे गुरुओं को सजा मिलती है और जो झूठे गुरुओं के पीछे लगते हैं उनकी क्या हालत होती है।

महान आत्माएं हमें डेमोस्ट्रेशन देने के लिए अपनी खोज आरंभ करती हैं, बहुत मेहनत करती हैं। ये आत्माएं लोगों को नमूना देने के लिए ही सब कुछ करती हैं। सन्त संसार में बने बनाए आते हैं, उन्हें धुर से ही मालिक का हुक्म होता है। कबीर साहब कहते हैं, ''जिस तरह खजूर के पेड़ से फल तोड़ना मुश्किल होता है क्योंकि खजूर का पेड़ बहुत ऊँचा होता है उसी तरह फकीर को समझना भी मुश्किल होता है।''

जब स्वामी जी महाराज का अंत समय आया, उस समय कुछ प्रेमियों ने विनती की कि यह समय बातें करने का नहीं है। स्वामी जी महाराज ने कहा कि मैं आप लोगों से बातचीत करने के लिए ही यहाँ रूका हुआ हूँ।

बेशक मौत हर एक का गला दबाती है लेकिन सन्त मौत के अधीन नहीं होते। सन्त कुदरत के नियमों के मुताबिक संसार में आते हैं और कुदरत के नियमों के मुताबिक ही संसार में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। वे जब चाहें संसार से जा सकते हैं लेकिन सन्त ऐसा चमत्कार नहीं करते। गुरु नानकदेव जी कहते हैं: ***गुरुमुखि आवै जाइ निसंगु।।***

सन्तों को परमात्मा की तरफ से पूरी छूट होती है, वे जब चाहें मालिक के दरबार जा सकते हैं, जब चाहे संसार में आ सकते हैं। मालिक ने उनके लिए जी.टी. रोड की तरह रास्ता बनाया हुआ है। **गुरुमुख** को कोई रोक नहीं सकता। वे जब आँख बंद करते हैं तो मालिक के देश में हैं और जब आँख खोलते हैं तो संसार में हैं।

मैं आपको अपनी आँखों देखे एक–दो महात्माओं के वाक्य सुनाता हूँ। महात्मा खुद तो चमत्कार नहीं दिखाते लेकिन वे अपने किसी सेवक से ऐसा करवा देते हैं ताकि दुनिया को पता लग जाए कि जब उनका एक मामूली सा सेवक इतना कुछ कर सकता है तो सन्त क्या नहीं कर सकते?

आज से तीन सौ साल पहले हिन्दुस्तान पर मुगलों का बहुत मजबूत राज्य अपनी जड़े जमाए बैठा था, उन्होंने धर्म के नाम पर बहुत अत्याचार किए। खासकर आलमगीर औरंगजेब ने ज्यादा से ज्यादा मजहबी पक्षपात करके बहुत लोगों का कत्ल किया, उसने किसी साधु–सन्त को भी नहीं बख्शा था। औरंगजेब के हुक्म से गुरु गोबिंद सिंह जी का घर–बार लूट लिया गया। उनके दो बच्चे नींव में चिन दिए गए और दो बच्चे मैदान–ए–जंग में शहीद कर दिए गए।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज यहाँ से दक्षिण की तरफ गए। वहाँ एक बैरागी माधोदास डेरा बनाकर रहता था, वह पुंछ जिले का था। वह काफी रिद्धियाँ–सिद्धियाँ रखता था। उसने गुरु गोबिंद सिंह जी को रिद्धियों–सिद्धियों के जरिए चारपाई से गिराना चाहा लेकिन वे महापुरुष थे, वे नहीं गिरे। माधोदास गुरु गोबिंद सिंह जी के आगे हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और उसने कहा, ''आप मुझे जो हुक्म देंगे मैं वही करूंगा।'' गुरु साहब ने उससे पूछा, ''तेरा क्या नाम है?'' उसने कहा कि मुझे माधोदास बैरागी कहते हैं लेकिन मैं तो आपका बिना दाम का बंदा हूँ। आप जो सेवा कहेंगे मैं वह करने के लिए तैयार हूँ।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने उसे 'नाम' दिया और कुछ हिदायतें देकर दक्षिण से पंजाब की तरफ भेजा। माधोदास ने मुगलों की जड़ें हिलाकर राज्य कायम किया। उसके बाद हिन्दुस्तान में मुगलों का राज्य टिक नहीं सका। जिसके गुरु के साथ इतना कुछ किया गया हो लेकिन उसके एक छोटे से सेवक ने इतना कुछ कर दिखाया तो गुरु क्या नहीं कर सकता? यह एक चमत्कार था, सन्त अनुशासन में रहते हैं।

इसी तरह महाराज सावन सिंह जी ने अपने बच्चों के लिए हरियाणा में काफी जमीन खरीदी। लुधियाना के इलाके महिमासिंह वाला गाँव में उनकी जायदाद महंगी बिकी और यहाँ सस्ती मिली। समाज के लोग हमेशा ही सन्तों का विरोध करते हैं। कुछ सामाजिक लोगों ने उनका काफी विरोध किया कि देखो जी, वैसे तो यह पूरा गुरु बनता है लेकिन संगत के पैसे से हरियाणा में जायदाद खरीदी है। महाराज सावन सिंह जी ने भरी संगत में बताया, ''मैंने हरियाणा में जायदाद तो जरूर खरीदी है लेकिन यह संगत के पैसे से नहीं खरीदी। यह बाबा जी की दया थी कि यहाँ मेरी जमीन महँगी बिकी और मुझे वहाँ जमीन सस्ती मिल गई।''

सीमाप्रान्त इलाके में उनका एक सेवक बलूचिस्तानी मस्ताना था। उसने सोचा कि मेरा गुरुदेव पूरा है लेकिन ये लोग क्या कह रहे हैं? उसने इस ख्याल से बारह–तेरह साल इस बागड़ के इलाके में ज्यादा से ज्यादा माया बाँटी। उसके पुराने जूते और पुराने कपड़े थे। वह सुबह उठकर बैठ जाता और सारा दिन हजारों आदमियों को पैसे और कपड़े बाँटता रहता।

हिन्दुस्तान की सरकार ने अनेकों बार उसकी तलाशी ली कि इसके पास नोट छापने वाली मशीन है। मस्ताना जी नए नोट बाँटते थे। लोग कहते कि ये जादू के नोट हैं, ये थोड़ी देर रहते हैं लेकिन अभी भी वे नोट खत्म नहीं हुए। तकरीबन सन् 1960 में मस्ताना जी ने चोला छोड़ दिया। अभी भी लोगों ने याददाश्त के लिए प्रसादी के तौर पर वे नोट रखे हुए हैं।

आप सोचकर देखें, महाराज सावन सिंह जी के लिए यह कहा गया कि इन्होंने संगत के पैसे से जमीनें खरीदी है लेकिन सरकार उनके एक छोटे से सेवक का भेद भी नहीं पा सकी कि यह बाँटने के लिए नए नोट कहाँ से लाता है? जिसका सेवक इतना कुछ कर सकता है उसके गुरु में कितनी ताकत होगी।

मस्ताना जी लोगों में यह साबित करना चाहते थे कि सावन सिंह पूरे गुरु हैं, वह किसी के मँगते नहीं। अगर कोई महाराज सावन सिंह जी से कहता कि आप कोई भेंट ले तो वे कहते, ''मेरी भेंट भजन–सिमरन है, वह करके लाएं।'' मस्ताना जी हमेशा महाराज सावन सिंह जी को जिन्दा रब या जिन्दा खुदा कहा करते थे और महाराज कृपाल को खुदा का बेटा कहते थे। पल्टू साहब कहते हैंः

भजन तेल की धार साधना निर्मल साधी

सन्तों की अखंड वृति होती है, उन्हें कोई रोक–टोक नहीं होती। वे जब चाहें आ–जा सकते हैं लेकिन वे कुदरत के नियमों के मुताबिक ही संसार को छोड़ते हैं।

अब सवाल का दूसरा हिस्सा– सतसंगी चोला छोड़कर सीधा सच्चखंड जाता है या रास्ते में अटक जाता है? प्यारेयो, यह सतसंगी की प्रीत पर निर्भर है अगर उसकी ख्वाहिशें दुनिया में हैं तो सतगुरु उसे फिर जन्म दे देता है लेकिन छोड़ता नहीं। उसका दूसरा जन्म अच्छा होगा, बुद्धि अच्छी होगी, पूरा इंसान का जामा होगा। गुरु उसे फिर आकर ले जाएगा लेकिन चौथे जामें से ज्यादा नहीं जाने देता।

सन्तों की कोशिश दूसरे या तीसरे जामें की नहीं होती, उनकी इच्छा इसी जन्म में ले जाने की होती है। कई कारणों की वजह से अगर सेवक कमाई नहीं कर सका लेकिन उसमें सच्ची प्रीत है, वह सच्चा जिज्ञासु है तो सन्त–सतगुरु अंदर के मंडलो में ही कमाई करवाकर उसे ऊपर ले

जाते हैं। दोबारा इस संसार में नहीं भेजते। सन्तमत परियों की कहानी नहीं अगर हम अपने जीवन को पवित्र बनाएं, ईमानदारी से गुरु के बताए हुए उपदेश पर चलें तो हम खुद अपनी आँखों से देख सकते हैं।

सेवादार रतन सिंह के समधी ने 77 आर. बी. आश्रम में मुझसे 'नाम' लिया। उसने तन–मन से नाम की कमाई की। सारा परिवार सतसंगियों का है वे यहाँ अच्छी सेवा करते हैं। वह मेरे पास आकर थोड़ी देर बैठता और अंदर का हाल बताया करता था, उसने कभी कोई दुनियावी समस्या की बात नहीं की। पिछले साल अप्रेल की बात है उसने बताया कि चार महीने से मुझे अंदर से आवाज आ रही है, शब्द गुरु ने कहना शुरु कर दिया है, ''तू आजा, आजा।'' उसने खाना बंद कर दिया, बस थोड़ा सा दूध ही पीता था। घर के लोगों को समस्या हुई कि हम अपने पिता की सेवा करें।

आखिर वे लोग उसे डॉक्टर के पास ले गए। उस डॉक्टर ने हमारी मैगजीन पढ़ी थी, उसका बहुत दिल करता था कि मैं सन्तों के पास जाकर नाम ले आऊँ लेकिन वह किसी कारण आ नहीं सका। जब उस बुजुर्ग को डॉक्टर के पास लेकर गए तो उस डॉक्टर ने कहा, ''इसे कोई बीमारी नहीं है अगर इसे दवाई दिलवाओगे तो उसका उल्टा असर होगा। मैं यह नहीं कह सकता कि यह कोई योगी है या यह किस चीज के आसरे जिंदा है।''

परिवार के लोगों ने प्यार के वश होकर उसे ग्लूकोज की बोतल लगवा दी जो रिएक्शन कर गई और उसे बहुत तकलीफ हुई। आखिर उसने कहा कि मुझे सन्तों के पास लेकर चलो। उसे यहाँ लेकर आए तो उसने मुझसे कहा, ''आप मेरे बच्चों से कहें कि मेरी दवाई न करवाएं, मुझे दवाई की जरूरत नहीं। मेरा 'शब्द' खुल चुका है।''

मैंने सरदार रतन सिंह को बुलाकर कहा कि देख, तेरा समधी कैसी बातें कर रहा है? और बच्चों को समझाया। यहाँ से तो बच्चे चुप करके अपने पिता को ले गए लेकिन घर जाकर उन्होंने हर किस्म की कोशिश

की। उस बुजुर्ग ने मजबूर होकर बताया, ''मैंने आज से बारह दिन बाद चले जाना है। दस दिन तुम्हारे घर में भजन करूंगा और ग्यारहवें दिन भजन नहीं करूंगा।''

यहाँ से अजीत सिंह अपने परिवार को जीप में लेकर गया। उनकी बिरादरी के और भी जो लोग थे वे कहने लगे कि यह कोई योगी है। पन्द्रह–बीस मिनट पहले मोहन सिंह ने मेरे पास आकर कहा कि सारा परिवार भजन पर बैठा है। वह बुजुर्ग अपनी दाढ़ी पर हाथ भी फेरता है और आराम से बैठा हुआ बातें करता है उसे कोई समस्या नहीं। परिवार को धीरज देता है कि फिक्र न करो, मैं बाबाजी के पास जा रहा हूँ, आखिर परिवार भजन पर बैठा रहा। वह चुपचाप चोला छोड़ गया।

बेसतसंगी लोगों पर इस बात का ज्यादा से ज्यादा असर हुआ। सब यही कह रहे थे कि हम भी उन सन्तों के पास जाकर नाम ले आते हैं। नाम के यह फायदे हैं कि हम भी बतन सिंह की तरह कमाई करें। यह सतसंगी पर निर्भर है अगर वह कमाई करता है तो वह पहले भी बता सकता है।

जिसने जीते जी आँखों से देखना है उसे कमाई करनी चाहिए। जिसे नाम मिल गया है, 'शब्द–गुरु' हमेशा ही सेवक के पास है। यह सेवक पर निर्भर करता है कि वह सीधा जाना चाहेगा तो गुरु उसे दुनिया में नहीं रखेगा। जिस तरह आलसी बच्चे कहते हैं कि पिता कमाए हम खाएं। सतगुरु दयालु होता है, उसे इंसानी जामे से नीचे नहीं जाने देता लेकिन सतगुरु उसकी ख्वाहिश के मुताबिक ही दया–मेहर करता है।

***

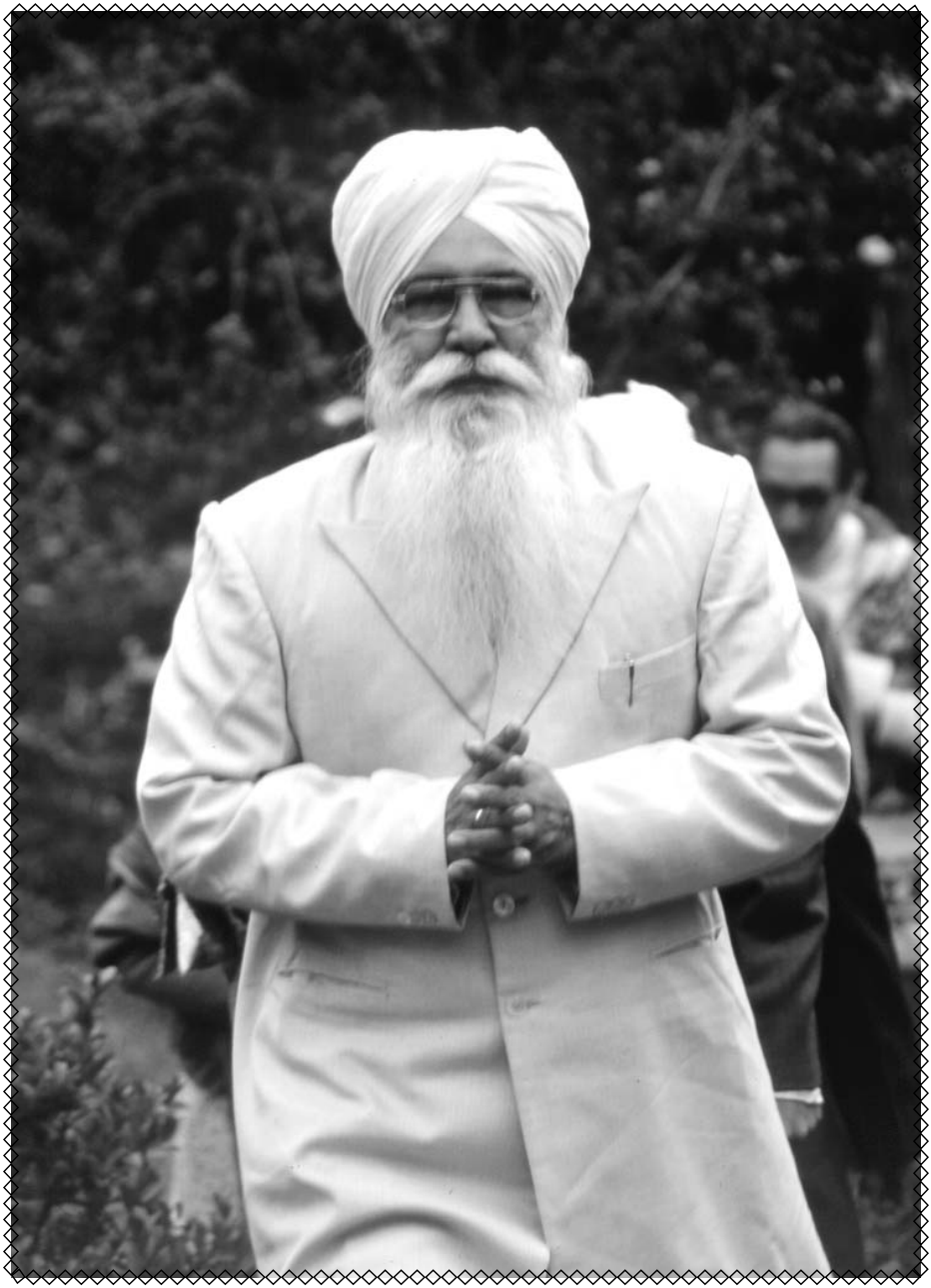

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

जो माँगना है सतगुरु से ही माँगें

30 अप्रैल 1977 कबीर साहब की बानी अमेरिका

गुरु हैं बड़ गोबिंद तें, मन में देखु बिचार।
हरि सुमिरै सो वार है, गुरु सुमिरै सो पार।।
गुरु सीढ़ी तें ऊतरै, सबद बिहूना होय।
ताको काल घसीट है, राख सकै नहिं कोय।।

कबीर साहब कहते है, ''गुरु, गोबिंद से बड़ा है। गुरु को एक पल याद करना भगवान को लाख पल याद करने से भी ज्यादा है।'' अब दिल में यह सवाल पैदा होता है कि भगवान ने सारी दुनिया को बनाया है और गुरु को भी उसी भगवान ने बनाया है फिर गुरु कैसे बड़ा हो सकता है?

हुजूर मिसाल देकर समझाया करते थे कि जिस तरह प्यारा बेटा पिता के हुक्म में रहता है। पिता बेटे की तारीफ करता है कि यह मेरा काबिल बेटा है, समझदार है। सन्त परमात्मा नहीं होते लेकिन परमात्मा के सारे गुण सन्तों में आ जाते हैं। सन्त परमात्मा के शरीक बनकर नहीं आते, उसके प्यारे बेटे बनकर आते हैं और उसे अपने प्यार में बांध लेते हैं।

नामदेव जी कहते हैं, ''भगवान कहते हैं कि मेरी बाँधी हुई को भक्त छुड़वा सकता है लेकिन भक्त की बाँधी हुई को मैं नहीं छुड़वा सकता। अगर मेरा भक्त मुझे भी बांध दे तो मैं उससे पूछ नहीं सकता कि मुझे किस अपराध में बांधा है?''

कबीर साहब कहते हैं, ''ऐसा सतगुरु जिसे मालिक की तरफ से जो तारीफ मिली है अगर हम उसके दिए हुए 'शब्द–नाम' की कमाई छोड़कर किसी और रास्ते पर चल पड़ते हैं तो उसे भगवान और यम दोनों माफ

नहीं करते, यम भी उसे बालों से पकड़ कर घसीटते हैं। सन्त अपने सेवकों को नाम की कमाई करने पर जोर देते हैं ताकि ये मालिक के दरबार में जाकर हमारी महिमा देखें।

अहं अगिननिस दिन जरै, गुरु से चाहै मान।
ताको जम न्योता दियो, होउ हमार मिहमान।।

हमारे अंदर हौमें की आग दिन–रात भड़क रही है, हम सतगुरु से भी मान चाहते हैं कि जब हम सतगुरु के पास जाएं तो वे हमारा आदर–मान करें। जब हम अहंकार में आकर यह चाहते हैं तब यम हंसता है और कहता है, ''कोई बात नहीं तू मेरा ही मेहमान है, तूने मेरे पास ही आना है।''

गुरु से भेद जो लीजिए, सीस दीजिए दान।
बहुतक भोंदु बह गये, राख जीव अभिमान।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जब आप गुरु से नाम लेते हैं, ज्ञान लेते हैं उसकी दक्षिणा में सेवक अगर अपना शीश भी दे दे तो वह भी कम है लेकिन हम अहंकार में बह जाते हैं, शीश देना नहीं जानते। शीश देने का यह मतलब नहीं कि हमने अपनी गर्दन काटकर गुरु के आगे रख देनी है या गुरु हमारे शीश के भूखे हैं। चाहे दुख आए, चाहे सुख आए जब हमारा शीश एक बार सतगुरु के चरणों में झुक गया है तो यह शीश कभी भी दुनिया की शक्तियों के आगे न झुके सिर्फ अपने सतगुरु के आगे ही झुके। **जो मांगना है सतगुरु से ही मांगे।** हमें सतगुरु से सतगुरु को ही मांगना चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थे, ''अगर हमने कोई वस्तु बनवानी है तो सबसे पहले मिस्त्री को अपने घर ले आएं फिर उससे जो मर्जी बनवा लें।'' अगर हम गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लें तो हम गुरु से जो मर्जी वस्तु मांग सकते हैं, वे हमारी सारी जरूरतें पूरी करेंगे।

गुरु समान दाता नहीं, जाचक सिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्हा दान।।

अब कबीर साहब कहते हैं कि दुनिया में गुरु जैसा दाता नहीं है। उसने हमें तीन लोक की दौलत बक्शी है लेकिन हमें पता नहीं है कि हमें कितनी बड़ी दौलत दी गई है क्योंकि हम वह दौलत पाकर उसकी कद्र नहीं कर रहे। आप देखें, जिन लोगों ने कमाई की, अंदर जाकर उस दौलत को हासिल किया, अपने सतगुरु से जुड़े उनसे पूछें कि आपको दुनिया की कोई धन–दौलत चाहिए या नाम चाहिए? वे बताएंगे की नाम की कीमत के मुकाबले दुनिया की धन–दौलत तुच्छ है। दुनिया की धन–दौलत यहीं रह जानी है, हमारे साथ नहीं जाएगी। जिस चीज़ ने हमारा साथ नहीं देना उसकी क्या कीमत है? नाम ने हमारी रक्षा करनी है, नाम ने हमारे साथ रहना है, नाम हमेशा ही कायम है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

नाम रहओ साधू रहओ रहओ गुरु गोबिंद।

यहां नाम, सतगुरु और परमात्मा ने ही रहना है।

जम गरजे बल बाघ के, कहै कबीर पुकार।
गुरु किरपा ना होत जो, तौ जम खाता फार।।

कबीर साहब कहते हैं, ''आप यह मत कहें कि यम ने हमें कुछ नहीं कहना। यम जीवों को देखकर ऐसे गरज रहा है जैसे मस्त हुआ शेर गर्जता है। गुरु नहीं मिलते तो वह हमें भी फाड़कर खा जाता।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि ऐसा मत कहें कि यम नहीं हैं, वह हर एक जीव का पूरा हिसाब–किताब लेता है।

गुरु पारस गुरु परस है, चंदन बास सुबास।
सतगुरु पारस जीव को,दीन्हा मुक्ति निवास।।

गुरु पारस हैं, जिसे छू लेते हैं उसे भी पारस बना लेते हैं।

अबरन बरन अमूर्त जो, कहो ताहि किन पेख।
गुरु दया तैं पावई, सुरत निरत कर देख।।

पंडित पढ़ गुन पच मुए, गुरु बिन मिलै न ज्ञान।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति है, सत सबद परमान।।

कबीर साहब कहते हैं, ''दुनिया पढ़ाई–लिखाई को ज्ञान समझती है। पोथियाँ पढ़ने से हमारे दिमाग में खुलापन आ जाएगा और हम इस संसार में शोभा पाएंगे। पोथियाँ जो बताती हैं उस पर अमल करने से ही हम वह ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

ज्ञान ध्यान धुन जाणीऐ अकथ कहावै सोइ।

'शब्द–नाम' से ही हमारी मुक्ति होनी है, यह अकथ है इसे कहा नहीं जा सकता। यह लिखने–पढ़ने का मजमून नहीं, यह हर इंसान के अंदर है।

मूल ध्यान गुरु रूप है, मूल पूजा गुरु पांव।
मूल नाम गुरु बचन है, मूल सत्य सतभाव।।

अब आप कहते हैं कि सारी पूजा का मूल गुरु के स्वरूप का ध्यान और गुरु के चरणों से प्यार है। गुरु जो वचन बोलते हैं वही मूल नाम है। गुरु वह नाम बताते हैं जिस नाम ने दुनिया की रचना पैदा की है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

गुर का बचन सदा अबिनासी गुर कै बचन कटी जम फासी।।

हम उस वचन को मामूली समझते हैं लेकिन जिन्होंने नाम की कमाई की उन्होंने गले से यम की फांसी काट ली,मुक्ति प्राप्त कर ली। गुरु हमेशा कहते हैं, ''मैं आपके अंदर इस स्वरूप में बैठा हूं, आओ, मुझे मिलो।''

कहै कबीर ताज भरम का, नन्हा व्हैके पाव।
तजि अहं गुरु चरन गहु, जम से बाचै जाव।।

कबीर साहब कहते हैं, ''तू दिल से भरम निकालकर सतगुरु के वचन की कमाई कर, तभी तू यम से बच सकता है।''

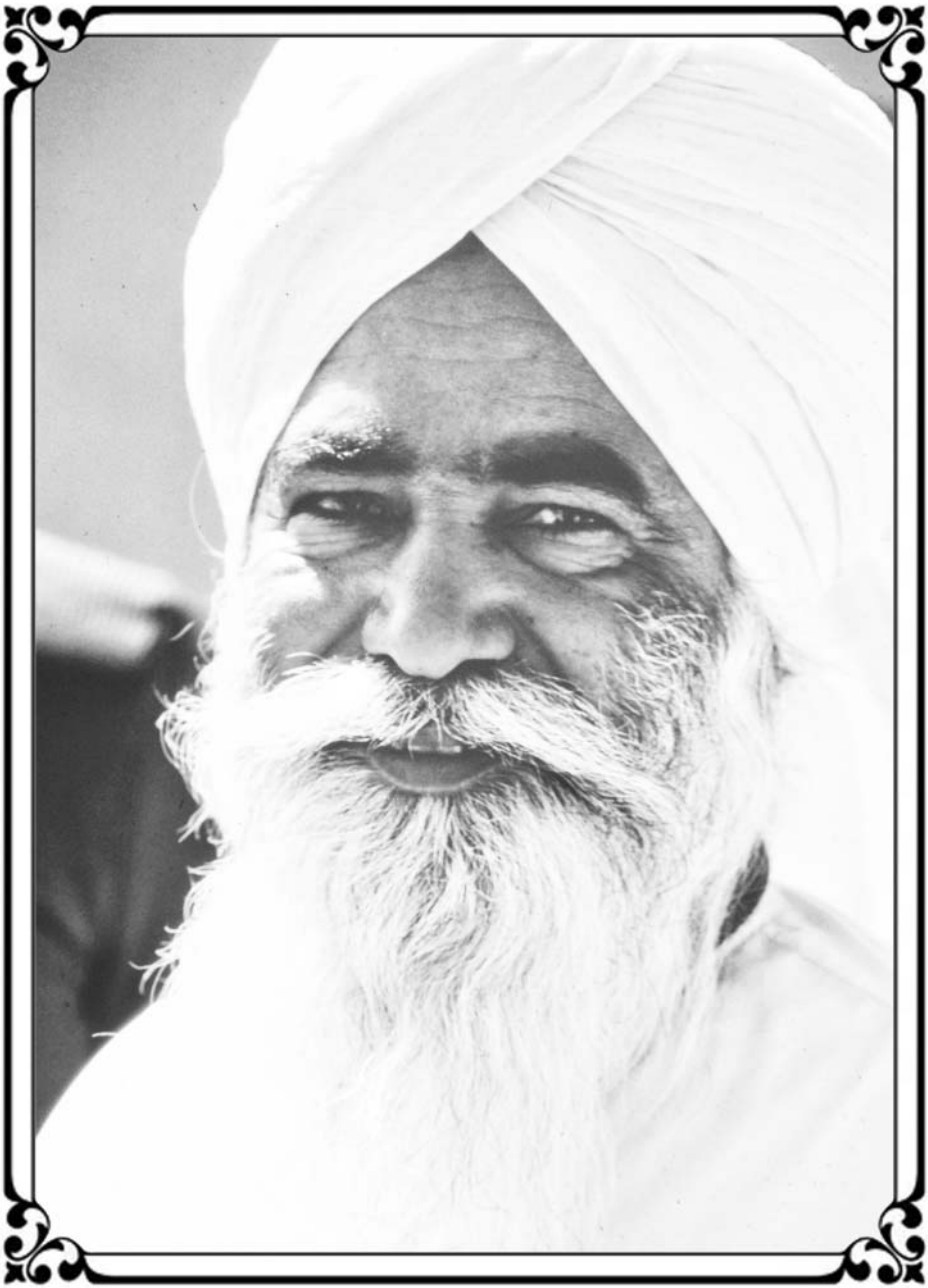

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

तीन लोक नौ खण्ड में, गुरु तें बड़ा न कोइ।
करता करै न कर सकै, गुरू करै सो होइ।।

कबीर साहब कहते हैं कि काल की यह रचना सात द्वीप और नौ खण्ड में बँटी हुई है। इन खण्डों और मंडलों में कोई भी ताकत सतगुरु से बड़ी नहीं। भगवान ने इन्हें हुक्म दिया है कि तू जो चाहे सो कर सकता है। गुरु हमें नाम देकर परमात्मा से मिलाते हैं। सन्तों को परमात्मा ने बहुत ताकत बक्शी होती है लेकिन उन्होंने कभी भी अपनी ताकत का दुनिया में दिखावा नहीं किया। सन्तों को बड़े–बड़े कष्ट दिए गए, किसी को गर्म तवी पर बिठाया गया तब भी उन्होंने खामोश होकर अपना वक्त बिताया।

गुरु अर्जुन देव जी को गर्म तवी पर बिठाया गया। लाहौर में रहने वाला उनका दोस्त मियां मीर अच्छी करामात वाला फकीर था। उसने कहा, ''गुरुदेव, यह क्या भाणा है? आप मुझे हुक्म दें, मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा देता हूं।'' गुरु अर्जुन देव जी ने कहा, ''मियां मीर, यह तो मैं भी कर सकता हूं लेकिन मालिक का भाणा मानना जरूरी है।''

जब गुरु तेग बहादुर जी को दिल्ली में कत्ल करने लगे उस समय औरंगज़ेब ने कहा, ''करामात दिखाओ नहीं तो तुम्हें कत्ल किया जाएगा।'' गुरु तेग बहादुर ने कहा, ''बादशाह, हम कत्ल होना ही जानते हैं, हम कोई करामात नहीं दिखाते। हम उस मालिक के शरीक नहीं बनते, हम उस मालिक के भाणे में रहकर ही खुश हैं।''

हुजूर महाराज के वक्त हमने ऐसी कई घटनाएँ देखीं, लोगों ने आकर कहना, ''सच्चे पातशाह, आपने हमारा यह काम किया।'' हुजूर कहते, ''मैं तो आपके जैसा ही हूं, मैंने कुछ नहीं किया।''

कबीरा हरि के रूठते, गुरु के सरने जाइ ।
कहै कबीर गुरु रूठते,हरि नहिं होत सहाइ ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''हरि रूठ जाए तो सेवक के पास गुरु के चरण है अगर गुरु रूठ जाए तो हरि सहायता नहीं करता क्योंकि हरि ने ही गुरु को बनाया है।''

मैंने पहले दिन आपको इनायत शाह और बुल्ले शाह की मिसाल देखकर समझाया था। बुल्ले शाह के गुरु इनायत शाह थे। बुल्ले शाह के परिवार में शादी थी, उन्होंने इनायत शाह से विनती की कि सतगुरु आपका शादी में होना जरूरी है। बुल्ले शाह ने कमाई में अच्छी तरक्की की हुई थी, इनायत शाह ने सोचा कि देखूं तो सही यह कुछ समझा भी है, इसे मेरे साथ कुछ प्यार भी है? इनायत शाह खुद तो शादी में नहीं गए पर उन्होंने अपना एक सेवक भेज दिया।

बुल्ले शाह ने सोचा कि यह तो अराइयों का लड़का ही है, इनायत शाह आते तो हम अच्छा समझते। उन्होंने अराइयों का लड़का समझकर उसके साथ कोई प्यार–मोहब्बत नहीं किया, अच्छा नहीं समझा। जब उस लड़के ने आकर इनायत शाह को बताया कि सतगुरु, उन्होंने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया, प्यार नहीं किया तो इनायत शाह ने कहा कि बुल्ले के घर का तो पानी पीना भी गुनाह है। इनायत शाह के इतना कहते ही बुल्ले शाह के ऊपर जितना नाम का रंग था उतर गया।

बुल्ले शाह ने आकर इनायत शाह के आगे बहुत मिन्नतें की, यहां तक कि गाने वालों का वेश धारण करके इनायत शाह के आगे खूब नाचा। बुल्ले शाह को नाचता हुआ देखकर इनायत शाह ने उसे पहचान लिया और कहा, ''तू बुल्ला है?'' बुल्ले शाह ने कहा, ''हां, हूँ तो बुल्ला पर भूला हुआ हूं।'' और अपनी नाम की कमाई वापिस करवाई।

गुरु की आज्ञा आवई, गुरु की आज्ञा जाय।
कहै कबीर सो संत है, आवागवन नसाय ।।

कबीर साहब कहते हैं कि जो अपना जीवन गुरु की आज्ञा में ढालता है, गुरु की आज्ञा में उठता–बैठता, सोता–जागता है, जिसने गुरु को अपना दीन–ईमान समझ लिया है वही सन्त है। जो स्वपन में बड़बड़ा कर भी गुरु–गुरु करता है, जागते हुए भी गुरु–गुरु करता है, वह गुरु का ही रूप हो जाता है, गुरु ही बन जाता है।

जैसे राधा का कृष्ण से प्यार था, वह भूल गई थी कि मैं राधा हूं। वह कृष्ण रूप ही हो गई और सखियों से पूछने लगी, ''कहीं राधा देखी है?'' सखियां हंसकर कहने लगी, ''राधा तो तू खुद ही है।'' वह कहने लगी कि नहीं, मैं तो कृष्ण हूं।

इसी तरह जो सेवक सतगुरु की कमाई करता है, आप उससे पूछकर देखें, ''क्या तू अपने नाम का मिशन चलाएगा?'' वह कहेगा, 'मेरा नाम क्या है? मैं तो सतगुरु का काम कर रहा हूं।'' जब कोई ऐसे शिष्य की तारीफ करता है तो उसे बुरा लगता है। वह कहता है, ''मेरे गुरु की तारीफ क्यों नहीं करते?'' क्योंकि वह खुद को भूला होता है, वह भी राधा की तरह खुद को कृष्ण समझता है। जहां देखता है वहां गुरु–गुरु नजर आता है। वह लोगों से भी यही कहता है, ''गुरु–गुरु करो, गुरु के बिना कुछ भी नहीं है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर गुरु बिना मै नाही होर।

थापन पाई थिर भया, सतगुरु दीन्ही धीर।
कबीर हीरा बनजिया, मानसरोवर तीर।।

***

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक महत्वपूर्ण संदेश

नशा छोड़ें

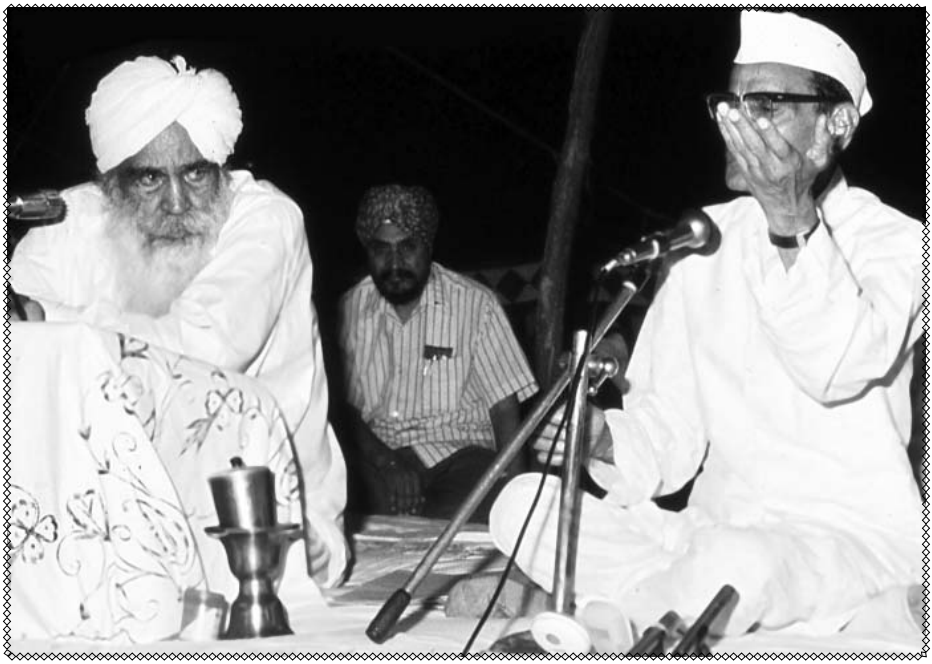

हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। माँस खाना अपने नए कर्मों के साथ साँठ–गाँठ करना है। माँस खाने से कठोर कर्मों का चक्कर बनता है क्योंकि हम जो बोएँगे वही काटेंगे। काँटो का पौधा बोने पर गुलाब के फूल नहीं मिलते।

सभी प्रकार के नशीले पदार्थ–शराब, अफीम, चरस हमारी चेतना को कम करते हैं और हमें अस्वस्थ करते हैं।

एक प्रेमी:– *जो लोग नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं क्या उन्हें अनुभव होते हैं?*

महाराज कृपालः नशीले पदार्थों का सेवन भ्रम पैदा करता है, यह आत्मा की मृत्यु है। नशीले पदार्थों के इस्तेमाल से चेतना कम हो जाती है तो स्वाभाविक ही ऐसे लोगों को निचले मंडलों में जाना पड़ता है। नीचे जाना निश्चित तौर पर पशु के समान है। साँप में भी चेतना होती है लेकिन उसका अलग स्तर है। आदमी में चेतना ज्यादा होती है लेकिन नशीले पदार्थों का इस्तेमाल करने से चेतना पर गहरा असर पड़ता है।

नशीले पदार्थ न केवल आपके स्वास्थय पर बुरा असर डालते हैं बल्कि आपकी आत्मिक तरक्की को भी नीचे ले जाते हैं। कृपया आप नशीले पदार्थों के सेवन को छोड़कर इनके बिना जीना सीखें, नशीले पदार्थों के सेवन से आप पीछे रह जाते हैं और ये आपको गंभीर दर्द देते हैं।

नशीले पदार्थ मन को बहलाते हैं। आध्यात्मिकता आत्मा का विज्ञान है, आत्मा शरीर में रहती है। हम गुरु से 'शब्द–नाम' प्राप्त करके अपनी आत्मा को जगाते हैं जोकि परमात्मा के पास वापिस जाने का रास्ता है। आध्यात्मिक दया कोई मजाक का विषय नहीं।

जो लोग बाहर की दवाईयों का आश्रय लेते हैं इससे इन्द्रियों में कंपन पैदा होने से ज्यादा कुछ नहीं। आप याद रखें आपने हमेशा शुद्ध शाकाहारी भोजन खाना है। आपने माँसाहारी खाने और नशीले पदार्थों से बचना है जोकि अंदरूनी तरक्की के लिए ज्यादा जरूरी हैं। मन को स्थिर करने के लिए चेतना को जगाना है।

अंदरूनी और बाहरी धर्मनिष्ठा, पवित्रता ज्यादा जरूरी है। नशीले पदार्थ हानिकारक होते हैं, ये दिमाग को कमजोर करते हैं। मन में संदेह पैदा करते हैं और व्याकुलता के स्थिर अहसास को धुंधला करते हैं, हमें इनसे बचना चाहिए।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

भाई केहर सिंह

परमपिता कृपाल बहुत दयालु थे, मैं आपकी दयालुता बयान नहीं कर सकता। मेरे ही गाँव का एक प्रेमी केहर सिंह अच्छा आदमी था। वह कभी–कभी सन्तमत के बारे में बहस करता और मुझसे कहता, ''इंसान का गुरु इंसान कैसे हो सकता है, इंसान भगवान नहीं हो सकता?'' मैंने उसे कई बार कहा, ''ये सब बातें तेरा मन कर रहा है, जब कभी तुझे सतगुरु के दर्शन होंगे, तेरे मुँह में जुबान नहीं रहेगी।'' वह जब सतगुरु कृपाल से मिला तो उन पर मोहित हो गया।

सन्त नाम देते हुए गलती नहीं करते। जब जीव उनकी शरण में आता है तो उन्हें ज्ञान हो जाता है कि इसके सिर के ऊपर कर्मों का कितना

बोझ है। भाई केहर सिंह के कर्म भी बहुत कठोर थे। हुजूर चाहते थे कि केहर सिंह सतसंग सुने फिर इसे नाम मिले क्योंकि सतसंग से कई कर्म कट जाते हैं। केहर सिंह चाहता था अगर मैंने यह मौका हाथ से निकाल दिया फिर यह समय हाथ नहीं आएगा। उसने हुजूर के आगे बहुत नम्रता से कहा, ''मैंने बहुत पाप किए हैं, अपने ऊपर बहुत जुल्म किए हैं लेकिन आज मुझे यकीन हो गया है कि मुझे बख्शने वाला आ गया है।'' फिर केहर सिंह ने यह तुक पढकर सुनाई:

नाम विसार करे रस भोग, सुख सुपने ही तन में रोग।

हुजूर ने हँसकर कहा, ''जब तुझे पता है कि बानी यह कहती है तो फिर इस पर चलता क्यों नहीं? जो लोग मालिक की बंदगी के बिना जीवन व्यतीत करते हैं उन्हें इस संसार मंडल में सुख नहीं मिलता वे चिन्ता की आग में सड़ते हैं, मरकर भूत–प्रेत बनते हैं और नर्कों में सड़ते हैं।'' जब हुजूर ने ये वचन कहे तो केहर सिंह ने पूछा, ''हुजूर, इस संसार मंडल में सारे ही अमीर–गरीब लोग चिन्ता की चिता में सड़ रहे हैं। किसी को शरीर की चिन्ता है, किसी औरत को पति का दु:ख है तो किसी पति को औरत का दु:ख है फिर नर्क में क्या हालत होगी?''

हुजूर महाराज ने कहा, ''भाई केहर सिंह! अगर मैं तुझे अपनी जुबानी सुनाऊँगा तो तूने नहीं मानना। तुम आँखें बंद करो तो तुम्हें नर्कों का हाल नजर आएगा।'' जब केहर सिंह ने हुजूर के हुक्म के अनुसार आँखें बंद की तो हुजूर ने केहर सिंह को नर्क का पूरा हाल दिखाया।

केहर सिंह अभी नर्क का हाल देख रहा था कि उतनी देर में वहाँ पाँच–छह यमदूत आए जो आते ही केहर सिंह को मारने लगे। केहर सिंह ने कहा, ''मैंने यहाँ कोई चोरी नहीं की फिर तुम मुझे क्यों मार रहे हो?'' उन यमदूतों ने उसे धर्मराज का लिखा हुआ हुक्म दिखा दिया कि तुम्हारी इतनी सजा बाकी है। केहर सिंह कोई जवाब नहीं दे सका। यमदूतों ने केहर

सिंह की जीभ को कड़े से नथ लिया और उसे पशुओं की तरह लेकर चल पड़े, आगे ले जाकर उसे एक बड़े नर्क में डाल दिया। वहाँ पत्थर आग की तरह तप रहे थे, उन पत्थरों पर चलने वाले रबड़ की तरह गिर रहे थे, वहाँ पर और भी अनेकों रूहें तड़प रही थी।

इससे आगे एक और नर्क था जहाँ रूहों के पैरों में सुए गड़े हुए थे और उनके सिर के ऊपर भारी–भारी पत्थर रखे हुए थे। जब रूहों ने दु:खों से घबराकर यमों से पानी माँगा तो यमों ने उन्हें पानी के बदले खून और पस पीने के लिए दिया। पस भी इतनी गर्म थी कि आग की तरह सड़ रही थी। जब केहर सिंह को पीने के लिए पस दी तो उस पस का दूध बन गया। केहर सिंह ने पेट भरकर दूध पिया क्योंकि केहर सिंह यह कौतुक परमपिता कृपाल की दया से देख रहा था।

केहर सिंह ने उन रूहों से कहा, ''अगर तुम भी मेरे सतगुरु कृपाल का नाम लो तो पस का दूध बन जाएगा।'' जब वे रूहें हुजूर महाराज कृपाल का नाम लेने लगी तो यमों ने उनकी जीभें निकाल ली ताकि ये रूहें सतगुरु का नाम न ले सकें।

फिर केहर सिंह को अगले नर्क में ले गए, वहाँ आदमी और औरतों का आधे से ज्यादा शरीर जमीन में गड़ा हुआ था। वहाँ यमदूत कौवों की शक्ल में उन्हें तोड़–तोड़कर खा रहे थे और भी कई तरह की सजाएं दे रहे थे। चारों तरफ से हाय! हाय! की आवाजें आ रही थी। वहाँ एक बहुत बड़ा जंगल था जहाँ आग के सिवाय कुछ भी नजर नहीं आ रहा था, वहाँ हजारों रूहें दानों की तरह भूनी जा रही थी। उन रूहों के ऊपर भारी–भारी पत्थर रखे हुए थे। रूहों ने गर्मी से घबराकर पानी माँगा तो यमों ने पानी की बजाए उनके मुँह में आग की धारें डाली। जब केहर सिंह के मुँह में आग डाली गई तो वह आग पानी बन गई।

फिर केहर सिंह को अगले नर्क में ले गए, वहाँ बूढी और जवान औरतें घुटनों तक जमीन में गढी हुई थी। उनकी बाँहे ऊपर करके बाँधी हुई थी और जीभ रस्सी से खींचकर बाहर की तरफ बाँधी हुई थी। उनकी छाती के ऊपर बड़े–बड़े पत्थर लटकाए हुए थे। सिर के ऊपर तपते हुए पत्थर रखे हुए थे। उनकी इन्द्रियों में से पस नीचे की तरफ बह रही थी। जो औरतें अपने हक के अलावा विषय भोगती रही हैं उनकी यह हालत है। यमदूत लोहे की सलाखें गर्म करके उनके शरीर पर दाग रहे थे।

यहाँ से केहर सिंह को दूसरे नर्क में ले गए। वहाँ पर रूहों को तपते हुए पत्थरों पर लिटाया हुआ था। उनके ऊपर लोहे का बेलन चलाकर खून निकाला जा रहा था और भी कई तरह की सजाएं दी जा रही थी।

फिर केहर सिंह को अगले नर्क में ले गए, जहाँ आदमी और औरतें घुटनों तक जमीन में गड़े हुए थे। इन औरतों और आदमियों ने मात लोक में पक्षियों का माँस खाया था और अब यमदूत पक्षियों की शक्ल में इनका माँस तोड़–तोड़कर खा रहे थे। वहाँ केहर सिंह ने सतगुरु को याद किया कि आप मेरी रक्षा करें। वहाँ सतगुरु कृपाल सिंह जी ने केहर सिंह का शरीर पत्थर का कर दिया, जिससे उस पर यमों का जोर नहीं चल सका।

सारी रूहें हाय! हाय! कर रही थी, यम उन्हें आग में गरम करके चाबुक मार रहे थे; उन रूहों का रोम–रोम आग की तरह जल रहा था। उसके बाद उन्हें तपते हुए कड़ाहे में डाला जाता था फिर उस कड़ाहे में मसाला डालकर सब्जी की तरह पकाकर यम उनका माँस खाते थे लेकिन जब केहर सिंह को उस कड़ाहे में डाला गया तो तपता हुआ कड़ाहा ठंडा हो गया। यमों ने सोचा इसके पीछे किसी काबिल फकीर की ताकत है जिस वजह से यह हर सजा से बच जाता है।

वहाँ से केहर सिंह को दूसरे नर्क में ले गए। वहाँ बारीक मिर्चें पीसकर रूहों की आँखों में डाली जा रही थी। केहर सिंह को एक छोटे से दरवाजे

से निकालने की कोशिश की गई, उस दरवाजे में एक फुट लम्बा–चौड़ा रास्ता था। केहर सिंह लेटकर उस दरवाजे से निकल गया, केहर सिंह के पैर अभी दरवाजे से बाहर ही थे कि यमदूतों ने दरवाजा बंद कर दिया, केहर सिंह की टाँगे कट गई। फिर केहर सिंह ने परमात्मा कृपाल को याद किया, सतगुरु को याद करते ही उसकी टाँगे साबुत हो गई।

वहाँ से केहर सिंह को एक और नर्क में ले गए, वहाँ खम्बे आग की तरह तप रहे थे, रूहों को उन खम्बों से लिपटाया जा रहा था। वहाँ कई रूहें पक्षियों की शक्ल में उलटी लटकी हुई थी। केहर सिंह ने पूछा, ''इन्होंने क्या जुर्म किया है?'' यमदूतों ने बताया, ''इन रूहों ने मातलोक में जन्म लेकर पक्षियों का माँस खाया था, अब इन्हें उस जुर्म की सजा मिल रही है।''

फिर केहर सिंह को अगले नर्क में ले गए। वहाँ बाजार आग की तरह जल रहे थे, वहाँ रूहों को नंगे पैर चलाया जा रहा था। वहाँ कई रूहें रबड़ की तरह पिघल रही थी और उनके ऊपर तपते हुए बड़े–बड़े पत्थर फैंके जा रहे थे। उन्होंने केहर सिंह को किसी और रास्ते से निकाला। केहर सिंह ने पूछा, ''बाकी रूहें उधर से जा रही हैं लेकिन मुझे दूसरे रास्ते से क्यों लेकर जा रहे हो?'' यमों ने बताया, ''उस रास्ते से वे रूहें जाती हैं जिन्होंने युगों के हिसाब से पत्थरों के नीचे रहना है।''

यमों ने केहर सिंह से पूछा कि तू बहुत बातें करता है, तेरे अंदर क्या खासियत है? केहर सिंह ने कहा, ''तुम मुझे मार नहीं सकते क्योंकि मेरा सतगुरु कृपाल है जिसके हुक्म से यह सब कुछ हो रहा है अगर तुम मेरे साथ नाजायज करोगे तो मैं मातलोक में जाकर ये सारी बातें महाराज कृपाल से कहूँगा। तुम्हारे जैसे हजारों जीव उनकी दरबानगी करते हैं।''

केहर सिंह ने यमों से पूछा कि यहाँ जीवों को इतनी सख्त सजाएं क्यों दी जाती है? यमों ने कहा कि हम तुम्हें नहीं बता सकते, तुम धर्मराज से

पूछ लेना। जब केहर सिंह धर्मराज के पास गया तो धर्मराज ने पूछा, ''तू यहाँ क्यों आया है?'' केहर सिंह ने कहा, ''यहाँ रूहों को इतनी सख्त सजाएं क्यों दी जाती हैं, इन्होंने क्या पाप किए है?'' धर्मराज ने कहा कि इन रूहों ने मातलोक में सन्त–फकीरों को कई तरीकों से दुःख दिए हैं। अब इन रूहों को युगों के हिसाब से तपते हुए कड़ाहे और तपते हुए पत्थरों के बीच सड़ते रहना है।

फिर केहर सिंह को दूसरे नर्क में ले गए। वहाँ जमीन में घास–फूस की जगह तीखे सूए गाड़े हुए थे। रूहों को करोड़ो फुट ऊपर ले जाकर उन तीखे सूओं पर फैंका जाता था, कई रूहों का शरीर उन सूओं पर गिरते ही दानों की तरह बिखर जाता था। जब केहर सिंह को भी यह सजा देने लगे तो केहर सिंह ने सतगुरु कृपाल को याद किया। जब केहर सिंह ने प्रार्थना की तो पलक झपकते ही सतगुरु जी वहाँ पहुँच गए। सतगुरु ने दूर से ही खड़े होकर दाएँ हाथ का इशारा किया नर्क ठंडे हो गए, यमदूत भाग गए फिर परमपिता कृपाल केहर सिंह को साथ लेकर मातलोक में आ गए।

यह सारा हाल केहर सिंह ने कई प्रेमियों को बताया अगर आज मुझे सतगुरु के दर्शन न होते तो मुझे भी ये नर्क भोगने पड़ते क्योंकि मैंने बहुत पाप किए थे। सतगुरु ने दया करके मुझे थोड़े से समय में दिखा दिया कि जीव जो भी पाप करता है, उसका फल अवश्य भोगता है।

हुजूर ने केहर सिंह को नाम तो पहले ही दे दिया था, कुछ दिनों बाद केहर सिंह ने चोला छोड़ दिया। हुजूर ने बड़ी दयालुता से केहर सिंह को अपने चरणों में जगह दी, अन्त समय में उसकी संभाल की।

***

बंदे दियां आसां सदा हुंदियां नां पूरियां

बंदे दियां आसां सदा, हुंदियां नां पूरियां,
नाम तों बगैर सभ्भे, रहंदियां अधूरियां, x 2
बंदे दियां आसां सदा.....

1 कदे दुःख कदे सुख, जीव उत्ते औंदा ऐ,
आप कीते कर्मां नूं, आपे भुगतौंदा ऐ x 2
लोक–लाज विच फस, होईयां मजबूरियां,
नाम तों बगैर सभ्भे रहंदियां अधूरियां, बंदे दियां आसां सदा.....

2 आया नाम जपणें नूं, माया जाल पा लया,
दाते नूं विसार, दातां विच चित्त ला लया x 2
गुरु तों बगैर कदे, पैंदियां नां पूरियां,
नाम तों बगैर सभ्भे रहंदियां अधूरियां, बंदे दियां आसां सदा.....

3 बण के परौणां, थोड़े दिनां लई आया सैं,
भुल्ल गया घर, चित्त ऐत्थे ही लगाया तैं, x 2
धीयां पुत्रां विच अड़या, पौंदा ऐ भसूड़ियां,
नाम तों बगैर सभ्भे रहंदियां अधूरियां, बंदे दियां आसां सदा.....

4 मान वडयाई जग, विच छड जाणी है,
खाली हत्थ झाड़, तुर चलया प्राणी है x 2
सच्चे नाम बिना, चढ़ गईयां मगरूरियां,
नाम तों बगैर सभ्भे रहंदियां अधूरियां, बंदे दियां आसां सदा.....

5 लख पातशाहियां, लक्खां लश्कर कूड़े ने,
गुरु तों बगैर, सब काज अधूरे ने x 2
'अजायब' कृपाल बिना, पैंदियां ना पूरियां,
नाम तों बगैर सभ्भे रहंदियां अधूरियां, बंदे दियां आसां सदा.....

सतसंगों के कार्यक्रमों की जानकारी

धन्य अजायब

सन्तबानी आश्रम 16 पी. एस. रायसिंह नगर (श्री गंगानगर) में सतसंग के कार्यक्रम

03, 04 व 05 नवम्बर	2023
01, 02 व 03 दिसम्बर	2023

RNI No - RAJHIN/2003/9899
Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2023-2025
Published on 08th Oct. 2023
Posting at RMS, Sri Ganganagar on 10th or 11th Oct. 2023